मासिक

इसलाहे समाज

अप्रैल **2018** वर्ष **29** अंक **04**

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़्क़

❑	वार्षिक राशि	**100** रुपये
❑	प्रति कापी	**10** रुपये
❑	टोटल पेज	**28**

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट **2035** क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	शअ़बान महीने की फ़ज़ीलत	**2**
2.	जमाअत का अनुशासन और आत्मनिरीक्षण...	**4**
3.	रोज़े के अहकाम और मसाइल	**6**
4.	रोज़ा और रमज़ान के महीने की श्रेष्ठता	**8**
5.	प्रेस रिलीज़ (मौलाना अब्दुल वहाब खिलजी)	**10**
6.	१८वां आल इंडिया अहले हदीस मुसाबक़ा	**12**
7.	प्रेस रिलीज़ (कांफ्रेन्स ६ मार्च २०१८)	**13**
8.	प्रेस रिलीज़ (कांफ्रेन्स १० मार्च २०१८)	**17**
9.	ऐलाने दाख़िला अल माहदुल आली	**21**
10.	मुहम्मद स०अ०व० ने सबको माफ़ कर दिया	**22**
11.	३४वीं कांफ्रेन्स की करारदाद	**23**
12.	विज्ञापन आडीटोरियम	**28**

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

जमाअत का अनुशासन और आत्मनिरीक्षण हम सबका कर्तव्य

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

अनुशासन, प्रबन्ध और डिसिपिलिन की कौमी मिल्ली, जमाअती और मानव जीवन में बड़ा महत्व है। प्रबन्ध और डिसीपिलिन से ही जमाअतें संगठन, मिल्लतें और कौमें बनती हैं। अगर किसी समाज, देश एवं मिल्लत और जमाअत के अन्दर इसका अभाव है या उसका संगठनात्मक ढ़ाचा कमजोर है तो वह न केवल धीरे धीरे अपना वजूद व पहचान खो देगी बल्कि अपने अफराद और कौम व मिल्लत के लिये भी लाभदायक नहीं रह जायेगी। जीवन के हर मरहले, हर मकाम और हर गोशे में प्रबन्ध डिसीपिलिन अपेक्षित और ज़रूरी है। अल्लाह ने दुनिया की हर चीज़ में इस बिन्दु को मलहूज़ रखा है और हर चीज़ को प्रबन्ध और डिसिपिलिन के साथ जोड़ दिया है बल्कि रचना ही इसी पर की है। कुरआन की इन दोनों आयतों ''हर चीज़ उसके पास अन्दाज़े से है'' (सूरे रअ्द'८) ''बेशक हमने हर चीज़ को एक (मुकर्ररा) अन्दाज़े पर पैदा किया है'' (सूरे क़मर-४९) में इसी हकीकत को बयान किया गया है।

व्यक्ति के आपसी संपर्क से ही उम्मत या जमाअत का गठन होता है और अगर अफराद के अन्दर रब्त (आपसी संपर्क) न हो, डिसिपिलिन न हो, वैचारिक बेराहरवी हो, व्यवहारिक बेएतदाली हो, जवाब देही का एहसास न हो, कर्मशैली में ठेहराव न हो, शूराइयत के नाम पर राय थोपने का मेजाज़ हो और खैरखुवाही और सौहार्द की भावना न हो तो इसे इन्सानों का झुण्ड तो कहा जा सकता है लेकिन जमाअत या कौम से इसे परिभाषित नहीं किया जा सकता है और व्यक्ति का प्रशिक्षण के बगैर जमाअती प्रबन्ध का प्रभावी और सफल काम कभी भी नहीं हो सकता इसलिये इस पर सबसे ज़्यादा ध्यान देना चाहिये।

जमाअतें इसलिये बनती हैं और गठित होती हैं कि संसाधन को संगठित करके लक्ष्य और उददेश्य को प्राप्त किया जाये इसके लिये जरूरी है कि जमाअत का नज्म और परस्पर संपर्क कायम ही नहीं बल्कि मज़बूत से मज़बूत तर हो। अगर ऐसा हो गया तो यकीन जानिये कि मानव जीवन के बड़े से बड़े मसले को कुरआन और हदीस की रोशनी में हल करने में हम कामयाब हो सकते हैं और वक्त के हर फितने और चैलेन्ज का आसानी से मुकाबला कर सकते हैं।

इस्लाम ने जमाअती व्यवस्था की मजबूती के लिये तीन प्रकार की निगरानियाँ कायम कीं। अपनी निगरानी, संगठन व संस्था की निगरानी और अवामी निगरानी क्यों कि यह निगरानियाँ इन्सान के अन्दर आत्मनिरीक्षण, जवाब देही और जिम्मेदारी का एहसास पैदा करती हैं और जिस संगठन के अफराद के अन्दर यह एहसास पैदा हो जाये कि कोई उनकी निगरानी कर रहा है। ऊपर अल्लाह अपनी तमाम तर कुव्वतों और कुदरतों व अमल को बराबर देख रहा है। नीचे उसके बन्दे भी जाहिरी आमाल को देख रहे हैं

तो वह निसन्देह पथभ्रष्ट और गुमराह नहीं होंगे। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''कह दीजिये कि तुम अमल किये जाओ तुम्हारे अमल अल्लाह खुद देख ले गा और उसका रसूल और ईमान वाले भी देख लेंगे और जरूर तुम को ऐसे के पास जाना है जो तमाम खुली और छुपी हुयी चीजों का जानने वाला है सो वह तुम को तुम्हारा सब किया हुआ बतला देगा'' (सूरे तौबा-१०५)

इसी तरह से जब मदीना में सहाबा का संगठन संगठित और मजबूत हो गया तो हर तरह के चैलेन्जों पर काबू पाना आसान हो गया बिगड़ा हुआ दिल और दिमाग दुरूस्त और इस्लाह पसन्द हो गया, तखरीबकारी की सभी तदबीरें नाकाम हो गयीं, जुवा, चोरी, कत्ल व खूंरेज़ी पर काबू पा लिया गया। अभिव्यक्ति की आज़ादी का माहौल बना अब एक कबीले को दूसरे कबीले से लुट जाने का खतरा नहीं था। रसूलुल्लाह ने जो संगठन स्थापित किया था वह एक मुकम्मल मानव संगठन भी था इसलिये कि इसके अन्दर रवादारी थी धार्मिक और वैचारिक मुनाफिरत नहीं थी इस संगठन का हिस्सा यहूदी भी थे और सबको संयुक्त मूल्यों पर जमा होने की दावत दी गयी थी कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है। ''आप कह दीजिये कि ऐ अहले किताब! ऐसी इन्साफ वाली बात की तरफ आओ जो हममें तुम में बराबर है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें न उसके साथ किसी को शरीक बनायें न अल्लाह तआला को छोड़ कर आपस में दूसरे को रब ही बनायें'' (सूरे आल इमरान-६४)

रवादारी (उदारता) का आलम यह था कि बिना धार्मिक भेदभाव प्रतिनिधिमण्डल का स्वागत मस्जिद के अन्दर किया जाता था जिसका दूर दूर तक अच्छा सन्देश गया, लोगों ने मुसलमानों को कटटर पंथी और अपना दुश्मन समझने के बजाये अपना मसीहा जाना और उनके सन्देश को मानवता का सन्देश समझा। इस प्रकार देश एवं मिल्लत बल्कि मानवता की समस्याएं हल होती गयीं ''और तू लोगों को अल्लाह के दीन में जूक दर जूक आता देख ले''। (सूरे नस्र-२) का खुशनुमा मनज़र सामने आया और भय एवं आतंक का माहौल इस तरह खत्म हो गया कि एक औरत कादसिया से सुन्आ तक अकेले सफर कर सकती थी लेकिन उसको अल्लाह के सिवा किसी का भय नहीं था।

जब तक हम और आप अपनी सच्चा और अच्छा प्रशिक्षण नहीं करेंगे जब तक अखलाक और लिल्लाहियत के साथ सत्कर्म का आधारशिला नहीं डालेंगे और खालिस कुरआन और हदीस की शिक्षाओं के अनुसार अपने कर्म और आचरण को नहीं ढ़ालेंगे तो हजार वलवला और जजबा और निरन्तर प्रयास के बावजूद निर्माण और विकास का काम नहीं होगा फर्द और जमाअत का हर इकदाम सुधार के बजाये फसाद और तखरीब का सबब हो गा।

सारांश यह है कि जमाअत की तंजीम सहीह रेखाओं और संगठित रूप से करने की ज़रूरत है। जमाअती अनुशासन और आत्मनिरीक्षण के द्वारा ही हमारे जमाअती, दीनी, मिल्ली और कौमी मसाइल हल हो सकते हैं। जमाअत बिना प्रबन्ध, डिसिपिलिन और आत्म निरीक्षण की भावना के ऐसे ही है जैसे शरीर बिना रूह। आइये संकल्प करें कि हम जमाअत को मज़बूत करेंगे और कोई ऐसा काम नहीं करेंगे या व्यवहार नहीं अपनायेंगे जिससे जमाअती प्रबन्ध ा तितर बितर होता हो या जमाअती व्यवस्था बिखरती हो।

❑❑❑

रोज़े के अहकाम और मसाइल

शैखुल हदीस मौलाना उबैदुल्लाह रहमानी रह०

ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स ने रमज़ान के महीने का रोज़ा ईमान के साथ और सवाब की नियत से रखा तो उसके पिछले पाप मआफ कर दिये जाते हैं (बुखारी १९०१)

सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया इन्सान जो भी कर्म करता है उस कर्म का बदला उसे दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक मिलता है लेकिन रोज़ा के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है कि रोजा खालिस मेरे लिये होता है इसलिये मैं ही इस का बदला दूंगा रोज़ा रखने वाला केवल मेरे लिये अपनी जिन्सी खुवाहिशात और मेरे लिये खाने पीने को छोड़ता है। रोज़ा रखने वाले के लिये खुशी के दो अवसर हैं एक खुशी उसे इफतार के वक्त हासिल होती है और दूसरी खुशी उसे उस वक्त प्राप्त होगी जब वह अपने पालनहार से मुलाकात करेगा और रोज़ा रखने वाले के मुंह की बू अल्लाह के यहां कस्तूरी खुश्बू से ज्यादा पाकीजा है। (बुखारी १८४४ मुस्लिम १६४)

हज़रत आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा फरमाती हैं कि जब रमज़ान का आखिरी दस दिन (अशरा) शुरू होता था तो आप स०अ०व० रात के अधिकांश भाग को जाग कर गुज़ारते। अपने परिवार वालों को भी जगाते और इबादत में ज्यादा से मेहनत करते। (मुस्लिम ११७४)

हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि रमज़ान के महीने में उमरा करना हज करने के बराबर है। (सहीह बुखारी, १७८२, मुस्लिम १२५६)

इसी प्रकार रमज़ान के महीने में सदका खैरात करने का सवाब ज्यादा मिलता है।

अहकाम व मसाइल

सेहरी खाना सुन्नत हैः आप स०अ०व० ने फरमाया अल्लाह और उसके फरिश्ते सेहरी खाने वालों पर सलात रहमत और दुआ-ए-मगफिरत भेजते हैं (मुसनद अहमद)

सेहरी देर से खाना सुन्नत है। एक रिवायत में है कि आप स०अ०व० फज्र की नमाज़ और सेहरी खाने में इतना गेप रखते थे कि जिस में आदमी पचास आयत पढ़ सके (बुखारी)

फज्र तुलूअ होते ही खाने पीने से रूक जाये और दिल में नियत कर ले जुबान से अदा करने की ज़रूरत नहीं है बल्कि यह बिदअत अर्थात दीन में नई बात है।

सूरज डूबने का यकीन होते ही इफतार में जल्दी करना मुस्तहब है। आप स०अ०व० ने फरमाया लोग उस वक्त तक खैर पर रहेंगे जब तक इफतार में जल्दी करेंगे। (बुखारी, मुस्लिम)

कुरआन की तिलावत, जिक्र नमाज़ और सदकात ज्यादा से ज्यादा किया जाये। आप स०अ०व० ने फरमाया रमजान के महीने में जिक्रे इलाही करने वाले की मगफिरत कर दी जाती है। एक रिवायत में है कि तीन लोगों अर्थात रोजेदार, इन्साफ करने वाले और मजलूम की दुआ रदद नहीं की जाती। (इब्ने खुजैमा, इब्ने हिब्बान)

रोज़े की हालत में क्या करना जायज़ है और क्या करने से

रोज़ा नहीं टूटता

''१. गीली या सूखी मिस्वाक दिन के किसी भी हिस्से में करना

२. सुर्मा लगाना और आंख में दवा डालना

३. सर या बदन में तेल मलना

४. खुश्बू लगाना

५. सर पर भीगा कपड़ा रखना

७. इंजेक्शन लगवाना जो कुव्वत और खाने का काम न दे।

८. जरूरत पड़ने पर खाने का नमक चेक करके तुरन्त थूक देना या कुल्ली करना

९. सुबहे सादिक के बाद नहाना

१०. मर्द का बीवी को चुंबन लेना व लिपटना, शर्त है कि मर्द अपने को कन्ट्रोल में रख सकता हो और संभोग का डर न हो।

११. रात में एहतलाम हो जाना

१२. औरत को देख कर इन्जाल अर्थात वीर्य का बाहर आ जाना।

१३. खुद से उलटी हो जाना चाहे थोड़ा हो या ज्यादा

१४. नाक में पानी डालना बगैर मुबालगा

१६. नाक के रेंठ का अन्दर ही अन्दर हलक के रास्ते अन्दर चले जाना

१७. कुल्ली करना शर्त यह है कि मुबालगा न करे।

१८. कुल्ली करने के बाद मुंह में पानी की तरी का थूक के साथ अन्दर चले जाना।

१९. मक्खी का हलक में चले जाना।

२०. इस्तिन्शाक-नाक में (पानी चढ़ाना बिना मुबालगा) की सूरत में बगैर इरादा पानी का नाक से हलक के अन्दर उतर जाना।

२१. मुंह में जमा थूक पी जाना मगर ऐसा न करना बेहतर है।

२२. मसूढ़े के खून का थूक के साथ अन्दर चला जाना।

२३. कुल्ली करते वक्त बिना इरादा पानी का हलक़ में उतर जाना।

२४. शर्मगाह में पिचकारी के ज़रिये दवा वगैरह दाखिल करना

२५. औरत से चुंबन व लिपटने की सूरत में इन्जाल हो जाना

२६. भूल कर खा पी लेना।

२७. गर्द गुबार धुवां या आटा उड़ कर हलक में चले जाना। २८. मोछों में तेल लगाना

२९. कान में तेल या पानी डालना और सलाई डालना

३०. दांत में अटके हुये गोश्त या खाने का टुकड़ा जो महसूस न हो और विखर कर हलक के अन्दर चला जाये।

जिन चीज़ों से रोज़ा टूट जाता है।

१. जान बूझ कर खाना पीना थोड़ा हो या ज्यादा

२. जान बूझकर संभोग करना

३. जान बूझकर उलटी करना थोड़ी हो या ज्यादा

४. हुक्का, बीड़ी सिग्रेट पीना,

५. पान खाना

७. खाना पीना या संभोग करना रात समझ कर या यह ख्याल करके कि सूरज डूब गया है जबकि सुबह हो चुकी थी या सूरज डूबा नहीं था।

८. मुंह के अलावा किसी जख्म के रास्ते से नलकी के माध यम से खाना या दवा अन्दर पहुंचाना

इन सब हालतों में टूटे हुये रोज़ों को पूरा करना जरूरी है और जान बूझ कर बीवी से संभोग कर लेने पर कज़ा के साथ कफ्फारा देना भी ज़रूरी है।

❑❑❑

रोज़ा और रमज़ान के महीने की श्रेष्ठता

सुबह फज्र शुरू होने से पहले शाम को सूरज डूबने तक खाना पीना छोड़ दिया जाये और मर्द औरत का मिलाप न हो, इसका नाम रोज़ा है। इसके अलावा किसी की गीबत चुगली, गाली, झूठी गवाही देना झूठ बोलना किसी पर बुरी नज़र डालना आदि इन बुरी हरकतों से भी रोज़ा में परहेज करना बहुत ही ज़रूरी होता है।

यूं तो हर महीना की १३वीं १४वीं और १५वीं तारीखों में और जिलहिज्जा महीने के पहले अश्रे में और शाबान के महीने में और अगर मुहर्रम की १०वीं तारीख में और सोमवार के दिन और शव्वाल में ईदुल फित्र के बाद छः रोज़े रखना, यह सब रोज़े सुन्नत हैं और उनके रखने का बड़ा सवाब है।

मगर रमज़ान का पूरा रोज़ा रखना हर मुसलमान मर्द और औरत के लिये ज़रूरी है। हां मरीज़ों, मुसाफिरों हामिला (गर्भवती) औरतों और दूध पिलाने वाली औरतों के लिये इस महीने में रोज़ा छोड़ने की इजाज़त है। मुसाफिर लोग अपने वतन में पहुंच कर अपने छूटे हुये रोज़े रखें।

बीमार लोग स्वस्थ हो जाने पर रोज़ों को बाद में कज़ा (पूरा) करें गर्भवती (हमल) वाली औरत या दूध पिलाने वाली हर दिन के रोज़ा के बदले एक मिस्कीन को खाना खिलाये या अगर बाद में पूरा (कज़ा) की सूरत हो जाये तो रोज़ा ही रख ले। हाइज़ा औरत भी हैज की हालत में रोज़ा न रखे बाद में कज़ा पूरा करे। ऐसे बूढ़े मर्द और औरत के लिये जो उम्र की आखिरी हद को पहुंच कर सख्त कमज़ोर हो चुके हो और रोज़ा की बिल्कुल ताकत न हो उनके लिये भी रोज़ा मआफ है मगर फिदया (बदले) में एक मिसकीन को खाना खिलाना जरूरी है। जब रमज़ान का चांद निकलता है तो शैतान कैद कर दिये जाते हैं और जन्नत के सब दरवाज़े खोल दिये जाते हैं इस महीने में नफिल नमाज़ का सवाब फर्ज़ के बराबर मिलता है और फर्ज़ नमाज़ों का दर्जा इतना बढ़ जाता है कि एक फर्ज़ का सवाब सत्तर फर्ज के बराबर मिलता है। इस महीने में हर नेकी के लिये यही आदेश है इस बुनियाद पर ज़कात का सवाब भी इस महीने में सत्तर गुना ज्यादा होगा।

इस महीने में हमारे प्यारे सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स० अल्लाह की विशेष तौर पर उपासना करते थे इस महीने में हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के साथ कुरआन मजीद का दौर करते थे इस महीने में जो शख्स अपने सेवक और नोकर के साथ आसानी करेगा अल्लाह तआला उसके गुनाहों को मआफ कर

देगा और जहन्नम की आग से उसे आज़ाद कर देगा।

सबसे बड़ा अभागा (बदकिस्मत) शख्स वह है जो अल्लाह को इस रमजान के महीने में खुश न कर सके और नेकियां न कमा सके। इस महीने में जो शख्स अल्लाह की खुशी के लिये रोज़े रखेगा तो अल्लाह के यहां इस का असंख्य सवाब है जिसको लिखने की शक्ति फरिश्तों को भी नहीं है।

एक हदीस में है कि जन्नत में आठ दरवाज़े हैं उनमें एक दरवाज़े का नाम रैयान है जिस में केवल रोज़ेदार ही प्रवेश करेंगे। रोज़ादार के लिये खुशी के दो वक़्त हैं पहला इफतार का है और दूसरा दिन वह होगा जब अपने रब से मुलाकात करेगा।

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि सन्देष्टा मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः रोज़ा और कुरआन दोनों बन्दों की सिफारिश करेंगे रोज़ा कहेगा कि ऐ मेरे रब मैंने इसको दिन में खाने और पीने से रोक दिया था आज बन्दे के बारे में मेरी सिफारिश को कुबूल कर ले। कुरआन कहेगा कि मैंने इसको रात में सोने से रोक दिया था और यह रात भर मेरी तिलावत करता था इसलिये इसके बारे में मेरी सिफारिश को कुबूल कर ले। हदीस में आता है कि रोज़ा और कुरआन की सिफारिश अल्लाह के यहां मान ली जायेगी। **(संकलित)**

❑❑❑

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की ५ तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। ५- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये ३ बजे से ५ बजे तक फून करें। 011-23273407

(प्रेस रिलीज)

मौलाना अब्दुल वहाब खिलजी का इन्तेकाल एक महान दीनी, जमाअती और मिल्ली खसाराः मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली १३ अप्रैल २०१८

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की प्रेस रिलीज़ के अनुसार जमाअत अहले हदीस के एक सक्रिय काइद और मिल्ली एवं समाजी हलकों में हरकतो अमल के लिये प्रसिद्ध शखसीयत नामवर आलिमे दीन और मर्कज़ी जमीअत के पूर्व महा सचिव मौलाना अब्दुल वहाब खिलजी का लम्बी बीमारी के बाद आज पौने चार बजे ६३ साल की आयु में इन्तेकाल हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्नाइलैहि राजिऊन।

प्रेस रिलीज़ के अनुसार आपके इन्तेकाल की खबर से जमाअती व मिल्ली हलकों में सफे मातम बिछ गयी और हर चेहरा मगमूम नजर आ रहा है। उनके इन्तेकाल की खबर जंगल की आग की तरह न केवल देश के अन्दर बल्कि देश के बाहर भी फैल गयी। निसन्देह उनकी वफात से मिल्ली और जमाअती हलकों में एक ऐसी कमी पैदा हो गयी है जिसका पुर होना जाहिरी तौर पर मुश्किल नजर आता है।

मौलाना अब्दुल वहाब खिलजी ४ जनवरी १९५६ को पंजाब के प्रसिद्ध शहर मालियर कोटला में पैदा हुये। प्रारंभिक शिक्षा मालियर कोटला में प्राप्त की। फिर उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिये दिल्ली गये और मदर्सा सुबुलुस्सलाम फाटक हबश खां दिल्ली में दाखिला लिया और यहां कुछ मुद्दत तक तालीम हासिल की। दिल्ली से जाकर जामिया रहमानिया वाराणसी में दाखिला लिया। वहां कुछ मुद्दत तक तालीम हासिल करने के बाद मदीना गये और मदरसा दारूल हदीस और फिर जामिया इस्लामिया से फरागत हासिल की।

आपके अध्यापकों में मौलाना अब्दुस्समद रहमानी, मौलाना फजलुर्रहमान बिन रहमुल्लाह, मौलाना अजीज़ अहमद नदवी, मौलाना अब्दुस्सलाम मदनी, मौलाना अमरूल्लाह रहमानी, शैख उमर मुहम्मद फुल्लाता और शैख अब्दुस्समद अल कातिब के नाम उल्लेखनीय हैं।

जमाअती और तन्जीमी शौक की बुनियाद पर जामिया इस्लामिया से फरागत के बाद ही जमाअत से जुड़ गये और मौलाना अब्दुल वहीद सलफी के दौरे एमारत में जब मौलाना अब्दुस्सलाम रहमानी महा सचिव थे, आप उप सचिव के पद पर विराजमान हुये। फिर १९८७ में कार्यवाहक महा सचिव बने। हज़रत मौलाना अब्दुल वहीद सलफी के इन्तेकाल के बाद २७ मई १९९० को मौलाना मुख्तार अहमद नववी साहब अमीर और आप महा सचिव चुने गये। १७ मई १९९० से १४ अक्टूबर २००१ तक मर्कज़ी जमअत के महा सचिव के पद पर रहे। इस प्रकार आप

लगभग १७ साल तक मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के उप महा सचिव, कार्यवाहक महा सचिव और महा सचिव के पद पर रहे।

आपके दौर निजामत में विभिन्न महत्वपूर्ण सत्र और कांफ्रेन्स हुयी और कई अहम मुसाबके हुये जिनमें ''हुरमते हरमैन शरीफैन कांफ्रेन्स'' ''आल इंडिया हिफ्जे हदीस शरीफ मुसाबका'' और ''आल इंडिया हिफ्ज तजवीद कुरआन करीम मुसाबका'' जैसे महत्वपूर्ण दीनी प्रोग्राम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ''हालाते हाज़िरा पर ओलमा-ए-अहले हदीस कांफ्रेन्स'' आयोजित की और इस अवसर पर ओलमा अहले हदीस की सेवाओं पर आधारित एक यादगारी पत्रिका ''नक्शे फिक्र व अमल'' प्रकाशित किया। आप के दौरे निजामत में सौतुल इस्लाम लाइब्रेरी कायम हुयी। पाक्षिक जरीरा तर्जुमान साप्ताहिक प्रकाशित हुआ। हिन्दी पढ़ने वालों के लिये मासिक इल्लाहे समाज शुरू हुआ। विदेश में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द को परिचित कराया। इस सिलसिले में देश विदेश के असंख्य दीनी दावती दौरे किये। महा सचिव की हैसियत से आपकी सेवाएं नाकाबिल फरामोश हैं।

प्रेस रिलीज के अनुसार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अलावा भी अन्य इस्लामी संस्थाओं और संगठनों से जुड़े रहे। आप जामिया सलफिया वाराणसी की प्रशासनिक समिति, आलमी इस्लामी कोन्सिल लंदन की कार्य सामिति, आल इंडिया मुस्लिम प्रस्नल्ला के सदस्य, आल इंडिया मुस्लिम मज्लिसे मुशावरत के सदस्य और आलइंडिया मिल्ली कौन्सिल के उपाध्यक्ष रहे।

आपने अपना एक इल्मी और शोधीय संस्था अददारूल इलमिया कायम किया जिससे विभिन्न भाषाओं में बहुत सी प्रतिष्ठित इल्मी और शोधीय किताबें प्रकाशित हुयीं और विश्व स्तर पर इसकी एक पहचान कायम हुयी।

उनका शुमार जमाअत के अत्यंत सक्रिय कायदीन में होता है कई साल पहले फालिज का हमला हुआ जिससे उनकी गतिविधियाँ थम गयीं तबीअत थोड़ी संभली तो फिर मिल्ली कामों में हिस्सा लेने लगे लेकिन पिछले महीने फिर फालिज का हमला हुआ और पूरी तरह से बीमार हो गये। हास्पिटल में उनकी बीमारपुर्सी के वक्त उनकी हालत देखकर अन्दाज़ा हो रहा था कि अल्लाह की रहमतों पर पूर्ण विश्वास रखने के बावजूद तबीअत मनोबल वर्धक नहीं है। पिछले दिनों पन्त हास्पिटल दिल्ली में इलाज चल रहा था कि दिल का दौरा पड़ा और आरटी मिज हास्पिटल गुड़गांव में इलाज के लिये ट्रांस्फर किया गया लेकिन तबीअत संभल न सकी और डाक्टरों ने घर ही पर रखने का मश्वरा दिया जहां आज लगभग ३:४५ बजे दिन उनका इन्तेकाल हो गया अल्लाह उनकी गलतियों को नेकियों से बदल दे। जमाअती और मिल्ली सेवाओं को कुबूल करे और जन्नतुल फिरदौस में आला मकाम दे और पसमांदगान विशेष रूप से उनकी बीवी मोहतरमा जो पति के साथ शरीके

दावत रहीं उनके साहबजादों मुहम्मद और उबैद और साहेबजादियों और सभी पसमांदगान को सब्र जमील दे। आमीन

तदफीन कब्रस्तान कौमे पंजाबियान शेदी पूरा, निकट ईदगाह सुबह आठ बजे अमल में आयेगी।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस के सम्माननीय अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी उनके नायबीन, महासचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली, उनके नायबीन और कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज़ सलाहकार एवं कार्य समीति के सदस्य और मर्कज़ी जमीअत के कार्यकताओं ने उनकी वफ़ात पर अपने रंज व गम का इजहार किया है और मरहूम के पसमांदगान, सभी जमाअत व जमीअत और आम मुसलमानों से शोक व्यक्त किया है और मरहूम की मग्फिरत और दरजात की बलन्दी की दुआ की है।

जारी कर्ता

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

❑❑❑

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस के ज़ेरे एहतमाम

18वाँ आल इंडिया मुसाबक़ा हिफ्ज़ व तजवीद और तफसीर कुरआन करीम

दिनांक 28-29 जुलाई 2018 शनिवार-रविवार स्थानः डी-254,

अहले हदीस कम्लेक्स ओखला, नई दिल्ली-25

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 25 जुलाई 2018

एक उम्मीदवार केवल एक ही श्रेणी में भाग ले सकता है फार्म मर्कज़ी जमीअत की वेब साइट www.ahlehadees.org से डाउन लोड किया जा सकता है।

अधिकृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें।

मुसाबका हिफ्ज व तजवीद व तफसीरे कुरआन कमेटी

011-23273407 Fax 011-23246613

Email.

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

(प्रेस विज्ञप्ति)

बन्दों और सभी देशों को अल्लाह अम्न व शान्ति के साथ आबाद रखे-*मुफ्ती हरम*

देश बन्धू और हमारे नौजवान अम्न व शान्ति का सन्देशवाहक बनें: मौलाना असगर अली सलफी

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा दो दिवसीय भव्य ३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स का शुभ आरम्भ

दिल्ली ६ मार्च २०१८

हमारा सन्देश विश्व शान्ति को साधारण करना है। इस्लाम का अर्थ अम्न व शान्ति है यही सन्देश तमाम मुसलमानों को एक शुभचिंतक समुदाय होने की हैसियत से फर्ज है हम अहले हदीस विश्व भाई चारा और राष्ट्रीय सदभावना के वाहक हैं। अहले हदीसों ने देश की आज़ादी से लेकर आज तक देश के निमार्ण और विकास में अपनी भूमिका निभायी है वह आज भी हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, शीआ सुन्नी भाई भाई का नारा लगाती है। और वह काम जिससे नफरत को हवा मिलती है, आतंकवाद को शह मिले, अहले हदीस उसके खिलाफ उठ खड़े होते हैं। देश में सबसे पहले हमने विभिन्न स्टेज से आतंकवाद का सामूहिक एवं व्यक्तिगत फतवा रिलीज किया। एक मुस्लिम संगठन की हैसियत से हम प्रदूषण, शराब नोशी, और मानवता के लिये हानिकारक चीजों से बचने का उपदेश दिया, देश से प्रेम और इस पर मर मिटने की व्यवहारिक शिक्षा एवं प्ररेणा हमने दी और आज भी हम इसके वाहक हैं। हमारे धार्मिक संगठन मदर्से ओलमा, क्षात्र और इमाम अल्लाह की खुशी के लिये देशप्रेम और मानवता दोस्ती का सन्देश देते हैं।

किसी तरह के अत्याचार यहां तक कि जानवरों और निर्जीव के साथ अत्याचार को वैध नहीं समझते। मां के पेट में बच्चियों को मारना, जिन्दों को मारने के बराबर अपराध है।

हम किसी भी कीमत पर बेराहरवी, भाषीय, क्षेत्रीय पक्षपात, लैंगिक हिंसा, बेहयाई लोकतांत्रिक मूल्यों की पामाली, औरतों का अपमान, लड़की होने के सबब भ्रूण हत्या शराब नोशी और प्रदूषण के फैलाव जैसी समसयाओं को घटित नहीं होने देंगे।

यह उदगार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष मौलाना असगर अली इमाम महदी

सलफी ने आज यहां रामलीला मैदान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा ''विश्व शान्ति की स्थापना और मानवता की सुरक्षा'' के शीर्षक से आयोजित दो दिवसीय भव्य ३४ वीं कांफ्रेन्स की अध्यक्षता करते हुये व्यक्त किया। उन्होंने कहा अत्याचार और आतंकवाद चरम सीमा को पहुंची हुयी है। सूद खोरी, शराब नोशी और अन्य मादक पदार्थों का इस्तेमाल आम है। जुवा और जहेज़ की लालच से मानवता परेशान है इंसानी जान की कोई कीमत नहीं रह गयी है कानून बनते हैं प्रदर्शन होते हैं मुजरिम को सलाखों के पीछे डाला जाता है लेकिन कुछ दिनों के बाद कानून के नरम पहलुओं को नर्म सहारा लेकर अपराधी जेल से बाहर होता है इन सब अपराध के खातमे के लिये हमको समाज सुधार के प्रयास तेज़ करने होंगे।

उन्होंने कहा कि मौजूदा हालात में नौजवानों को मुहतात रहने की जरूरत है किसी के बहकावे में न आयें अम्न व शान्ति के पैगाम को आम करें दीन से अपना रिश्ता जोड़ें बुजुर्गों और इमामों का सम्मान करें पवित्रता और उपकार इंसान को फितनों और फसाद का मुकाबला करने में सहायक होते हैं। एकता के बगैर आतंकवाद और अन्य समाजी बुराइयों का मुकाबला संभव नहीं है।

इस अवसर पर हरम के सम्माननीय मुफ्ती इब्राहीम बिन इब्राहीम अत्तुरकी ने नमाज़े जुमा की इमामत की उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा इस्लाम दया और करूणा का धर्म है यह हिंसा का धर्म नहीं है। इस्लाम अपने चरित्र से फैला है वह इंसानी जान व माल और सम्मान का रक्षक ही नहीं बल्कि वह चौपायों और पक्षियों के अधिकार का भी रक्षक है। उन्होंने अल्लाह से दुआ की कि भारत को शान्ति स्थल बनाये और सभी नागरिकों की सुरक्षा फरमाये।

इससे पहले स्वागत समीति के अध्यक्ष मौलाना अब्दुर्रहमान रहमानी ने अपना स्वागत संबोधन पेश करते हुये कहा कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की उपलब्धतायें सराहनीय हैं। विभिन्न मैदानों में उसने स्पष्ट कार्य किया है मैं जब दिल्ली आया तो महसूस किया कि जमीअत सक्रिय है हर मैदान में जमीअत ने काफी उन्नति की है और हम सब की रहनुमाई की है। चाहे तलाक़ का मामला हो मुस्लिम पर्सनल्ला में हस्ताक्षेप का मामला हो या बाबरी मस्जिद, या फिलिस्तीन का मसला हो अन्य धर्मों के दृष्टिकोर्ण और मतों के साथ न्यायायिक बरताव किया है जो कि सराहनीय है। उन्होंने कहा कि इस्लाम ने अल्लाह के अधिकार को अदा करने के साथ बन्दों के अधिकार को अदा करने को फर्ज़ करार दिया है और इन अधिकारों को अदा न करने पर सज़ा की चेतावनी दी है।

कांफ्रेन्स से संबोधित करते हुये जमीअत ओलमा के महा सचिव मौलाना महमूद मदनी ने कहा कि इन दिनों हमारा मुल्क बड़े मुश्किल दौर से गुज़र रहा है बाज़ ताक़तें दूसरों को अधिकार

से वंचित करना चाहती हैं लेकिन उनको मालूम नहीं कि आजमाइश हमें और ज़्यादा आगे बढ़ायेगी। शान्ति व मानवता के शीर्षक पर भव्य कांफ्रेन्स के आयोजन पर बधाई देता हूं इस कांफ्रेन्स में शिर्कत मेरे लिये सौभाग्य की बात है ईसा खान अनीस जामई ने अपनी राज्य इकाई की तरफ से मर्कज़ी जमीअत को बधाई देते हुये कांफ्रेन्स को समय की अहम ज़रूरत करार दिया है।

नदवतुल मुजाहिदीन केराला के प्रतिनिधि श्री अब्दुल मजीद सलाही ने अपने उदगार पेश करते हुये कहा कि शीर्षक के चुनाव पर मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द और उसके पदधारी बधाई के पात्र हैं। उन्होंने दाइश की निन्दा करते हुये कहा कि हमारा संविधान मानव अधिकार का झंडा वाहक है और यह अधिकार सबको मिलना चाहिये।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पूर्व महासचिव मौलाना रजाउल्लाह अब्दुल करीम मदनी ने कहा कि यह कांफ्रेन्स एक विशेष उददेश्य के लिये आयोजित की गयी है। उन्होंने कहा कि हमारे नौजवानों को अपने ओलमा से जुड़ कर रहना चाहिये जिसका संबन्ध हमारे घर समाज देश और मानवता से है। हम हर पहलू से जिम्मेदारी निभायें कांफ्रेन्स आयोजित करने वालों को अल्लाह तआला बेहतरीन बदला दे।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस उडीशा के अमीर मौलाना ताहा सईद खालिद मदनी ने मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पदधारियों को राज्य इकाई की तरफ से बधाई देते हुये कहा कि देश एवं समूदाय की समस्याओं पर कांफ्रेन्स सौभाग्य की बात है। मौजूदा हालात में यह सत्र एक सकारात्मक पहल है। इस कांफ्रेन्स से इस्लाम धर्म को सही ढंग से समझने का मौक़ा मिलेगा।

मौलाना मुहम्मद अली मदनी ने कहा कि इस कांफ्रेन्स में शिर्कत हमारे लिये अत्यंत सौभाग्य की बात है और अपनी तरफ से और तमाम पदधारियों की तरफ से सम्माननीय अध्यक्ष को इस प्रोग्राम के आयोजन पर मुबारकबाद देता हूं।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस राजस्थान के उपाध्यक्ष मौलाना इस्माईल सरवाड़ी ने सम्माननीय अध्यक्ष को बधाई देते हुए कहा कि यह कांफ्रेन्स उनकी बहुमूल्य सेवाओं की एक अहम कड़ी है।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस झारखण्ड के सचिव मौलाना शमसुल हक सलफी ने मौजूदा हालात पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि मर्कज़ी जमीअत ने विश्व शान्ति की स्थापना पर इतनी भव्य कांफ्रेन्स आयोजन करके यह सन्देश दिया है कि वह मानवता के सुलगते मसलों पर चिंतित रहती है।

हाफिज़ शकील अहमद मेरठी ने कांफ्रेन्स के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये कहा कि इस कांफ्रेन्स ने साबित कर दिया है कि जमाअत अहले हदीस की दावत संपूर्ण रूप से इस्लामी व इंसानी शिक्षाओं की तरफ दावत है हमारा संगठन अल्हम्दुलिल्लाह

एकजुट है।

मौलाना अब्दुस्सलाम सलफी मुंबई ने जमीअत में एकजुटता पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा यह बहुत संतुष्ट जनक बात है हमें आशंकाओं के माहौल से बचना चाहिये और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द हमेशा सकारात्मक अन्दाज़ में काम करती है।

दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डा० ज़फरूल इस्लाम ने कहा कि यह कांफ्रेन्स भारतीय मुसलमानों की अम्न पसन्दी का प्रतीक है और यह बता रही है कि हम आतंकवाद के खिलाफ एकजुट हैं उन्होंने नौजवानों से ओलमा व मदारिस से जुड़े रहने की अपील की।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस बरतानिया के उप सचिव मौलाना शेर खान जमील अहमद उमरी ने कहा कि कांफ्रेन्स का शीर्षक अत्यंत महत्व पूर्ण है मौजूदा हालात में इसकी अहमियत और ज़्यादा बढ़ जाती है आज पूरी दुनिया को अम्न व शान्ति की सबसे ज़्यादा आवश्यकता है इस जमाअत और अन्य जमाअतों ने इस देश को आज़ादी दिलाने में महत्वपूर्ण रोल अदा किया है।

मौलाना सलाहुद्दीन मक़बूल ने विश्व शान्ति के शीर्षक पर कांफ्रेन्स के आयोजन पर बधाई देते हुए कहा कि इस्लाम अम्न व शान्ति का धर्म है और इसका सबसे ज़्यादा प्रतिनिधुत्व जमाअत अहले हदीस करती है।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस जम्मू कशमीर के सचिव डा० अब्दुल लतीफ किन्दी ने विश्व शान्ति कांफ्रेन्स के आयोजन पर बधाई पेश करते हुये कहा कि इस्लामी शिक्षाओं को देश बन्धुओं तक पहुंचाने की ज़रूरत है।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस पूर्वी यूपी के अध्यक्ष हाफिज़ अतीकुर्रहमान तैयबी ने कहा कि जिस शीर्षक से यह प्रोग्राम हो रहा है वह अत्यंन्त अहम और ज़रूरी है इसके लिये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जिम्मेदारान को बधाई देता हूं। इस प्रोग्राम में भाग लेना मेरे लिये सौभाग्य की बात है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष अलहाज वकील प्रवेज ने प्रोग्राम के अन्त पर सबका शुक्रिया अदा किया - डा० फहदुल इस्लाम सलफी की तिलावत कलाम पाक से इस प्रोग्राम का आरंभ हुआ।

स्पष्ट रहे कि यह कांफ्रेन्स १० मार्च की रात १० बजे तक जारी रहेगी। मस्जिद हरम नबवी के मुफ्ती मग़रिब की नमाज़ की इमामत और इसके बाद कांफ्रेन्स से संबोधन करेंगे। अगले दिन सुबह ६ बजे पहला सत्र शुरू होगा जिसमें विभिन्न मिल्ली समाजी धार्मिक और राजनीतिक हस्तियां, ओलामा और सम्माननीय शंकराचार्य भाग लेंगे और आतंकवाद के खिलाफ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के फतवों के नये एडीशनों का विमोचन होगा।

जारी कर्ता

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

❑❑❑

(प्रेस विज्ञप्ति)

अत्याचार और अन्याय का मुकाबला हिंसा से करना इस्लामी शिक्षाओं के खिलाफ हैः *मौलाना असगर अली सलफी*

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स दूसरे दिन सफलता पूर्वक जारी

दिल्ली १० मार्च २०१८

इन्सान की जान अल्लाह की अमानत है उसको बर्बाद करना हराम है और हालात से मजबूर होकर आत्महत्या करना महा पाप है लेकिन इससे भी बड़ा पाप यह है कि दूसरों को खत्म करने के लिये अपनी जान को हलाक कर दे। शराब नोशी, खून खराबा, गन्दगी, और प्रदूषण से देश और मानवता को बचाना हमारा कर्तव्य है। यह यथार्थ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के सम्माननीय अध्यक्ष मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने व्यक्त किया महोदय मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द द्वारा आयोजित राम लीला मैदान में ''विश्व शान्ति और मानवता की सुरक्षा'' के शीर्षक पर आयोजित ३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स के दूसरे दिन भरी सभा से संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा अत्याचार और अधिकार हनन और नाइंसाफी अपराध है लेकिन इसका मतलब यह कदापि नहीं कि इसके खात्मे के लिये हिंसा और हिंसक प्रदर्शन का रास्ता अपनाया जाये। इस्लाम अम्न व शान्ति का वाहक है वह कानून को हाथ में लेने की कभी इजाज़त नहीं देता। मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द इस्लाम की उज्जवल शिक्षाओं पर अग्रसर है कि शासकों की फरमाबरदारी की जाये वह जालिम सरकार के खिलाफ भी प्रदर्शन और बगावत को इस्लाम धर्म के विरूद्ध मानती है।

इमाम मुहम्मद बिन सऊद इस्लामिक यूनीवर्सिटी रियाज के पूर्व प्राध्यापक डा० अबदुर्रहमान फरेवाई ने अपने अध्यक्षता संबोधन में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जिम्मेदारान विशेष रूप से मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को बधाई देते हुये कहा कि अम्न व शान्ति की अहमियत हर दौर में सर्वमान्य है और अम्न की बात करना और उसको फैलाने की कोशिश करना पूरे समुदाय और मानवता के हित में है इस बारे में हर व्यक्ति को अपनी भूमिका निभानी चाहिये। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने राष्ट्र एवं समुदाय और मानवता को चिराग दिखाने का काम किया है। यह कांफ्रेन्स विश्व शान्ति और मानवता की सुरक्षा के सिलसिले में मील का

पत्थर साबित होगी।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने कहा कि आतंकवाद देश एवं मानवता के लिये बड़ा खतरा और विकास की राह की रूकावट है। यही वजह है कि मर्कज़ी जमीअत हमेशा आतंकवाद और दाइश सहित आतंकी संगठनों के विरूद्ध सक्रिय रही है।

जामिया सिराजुल उलूम के सचिव मौलाना शमीम अहमद नदवी ने कहा इस शीर्षक पर कांफ्रेन्स मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी के स्पष्ट कारनामों में से है। इस्लाम में अम्न व शान्ति की बड़ी अहमियत है जमाअत अहले हदीस इसी अम्न व शान्ति की प्रचारक है।

मौलाना ताहिर हनीफ मदनी रियाज ने कहा कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स बड़ी महत्वपूर्ण है। इसके आयोजन पर पदधारियों को बधाई देता हूं। वास्तव में अम्न व शान्ति एक बड़ी नेमत है ईमान के साथ अम्न की बका और सुरक्षा संभव है।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस तमिलनाडो एवं पांडेचेरी के सचिव मौलाना अब्दुल अलीम उमरी ने कहा कि यह एक अच्छी कांफ्रेन्स है। विश्व स्तर पर जो अफरातफरी का माहौल है ऐसे में इसका आयोजन अत्यंत अहम और वक्त की जरूरत है। इसके आयोजन पर बधाई पेश करता हूं।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के उपाध्यक्ष हाफिज़ अब्दुल कैयूम ने सम्माननीय अमीर को बधाई देते हुये कहा कि यह कांफ्रेन्स समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है और इसका सन्देश परस्पर-स्तित्व और मानवता की सुरक्षा है।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना अब्दुस्सत्तार सलफी ने कहा कि इस महत्वपूर्ण कांफ्रेन्स के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत के सभी पदध ाारियों का शुक्रिया अदा करते हैं और इसमें भाग लेने वाले तमाम लोगों का स्वागत करते हैं।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस बिहार के सचिव मौलाना इंआमुल हक मदनी ने कहा कि यह कांफ्रेन्स मौजूदा हालात में अत्यंत महत्वपूर्ण है मैं इसके लिये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जिम्मेदारान को बधाई देता हूं।

मौलाना सज्जाद हुसैन सचिव जमीअत अहले हदीस पश्चिम बंगाल ने कहा कि अल्लाह ने हमें इस भव्य कांफ्रेन्स में भाग लेने की क्षमता दी और मर्कज़ी अहले हदीस हिन्द ने यह कांफ्रेन्स आयोजित की इसके लिये यह हमारे शुक्रिया की पात्र है।

सांसद अली अनवर ने कहा कि कांफ्रेन्स के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पदधारियों को बधाई देतेा हूं उन्होंने इस शीर्षक पर कांफ्रेन्स को समय की आवश्यकता करार देते हुये कहा कि आज पूरी दुनिया के हालात हर्ष वर्धक नहीं हैं। उच्च आचरण के द्वारा हालात को दुरूस्त किया जा सकता है।

मुस्लिम प्रस्नल्ला के प्रसिद्ध सदस्य कमाल फारूकी ने कहा कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर देश समुदाय और मानवता के हवाले से सराहनीय भूमिका निभा रहे हैं। और जब तक वह मौजूद हैं देश एवं समुदाय का नुकसान नहीं हो सकता। यह कांफ्रेन्स महत्वपूर्ण शीर्षक पर आयोजित हुयी है और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने यह साबित कर दिया है कि देश एवं समुदाय को पेश समस्याओं के समाधान के सिलसिले में वह सदैव चिंतित रहती है इसके लिये मैं मर्कज़ी जमीअत के पदधारियों को बधाई देता हूं।

जमाअत इस्लामी के सचिव मुहम्मद अहमद ने कहा कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द बधाई की पात्र है कि महत्वपूर्ण शीर्षक पर ऐसे हालात पर कांफ्रेन्स आयोजित कर रही है जबकि दुनिया को इसकी बड़ी सख्त ज़रूरत है अम्न व शान्ति के लिये इन्साफ ज़रूरी है।

प्रसिद्ध धर्म गुरू पण्डित एन. के शर्मा ने कहा कि अम्न व शान्ति की ज़रूरत केवल मुसलमानों और दलितों को ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र को है और मुहम्मद स०अ०व० केवल मुसलमनों के ही सन्देष्टा नहीं बल्कि हम सबके धर्म गुरू और सम्माननीय हैं। मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने ऐसे शीर्षक पर जो समय की सख्त ज़रूरत है कांफ्रेन्स आयोजित की और इसमें दाइश और आतंकवाद के खिलाफ फतवा जारी किया।

आल इंडिया मुस्लिम मज्लिसे मुशाविरत के अध्यक्ष नवेद हामिद ने कहा कि मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी इस कांफ्रेन्स के आयोजन पर बधाई के पात्र हैं। तारीख गवाह है कि जब भी भारत में अम्न की स्थिति खराब हुयी है ओलमा ने आगे बढ़कर अम्न को बहाल किया है।

सांसद मु० सलीम ने कहा कि पूरी दुनिया में अम्न खतरे में है इस्लाम अम्न का सन्देश है और अम्न का माध्यम भी। अम्न के लिये जरूरी है कि इस्लामी सिद्धांतों को अपनाया जाये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द को इस कांफ्रेन्स के आयोजन पर बधाई पेश करता हूं।

आल इंडिया अइम्मा मसाजिद संगठन के अध्यक्ष डा० उमैर इलयासी ने कहा कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के तमाम जिम्मेदारान अम्न व इंसानियत के शीर्षक पर कांफ्रेन्स के आयोजन पर बधाई के पात्र हैं आतंकवाद का विरोध सबसे पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने किया और इसके लिए मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी बधाई के पात्र हैं।

शैख फाइज़ बिन मुतअब अददैहानी कोयत ने कहा कि इस महत्वपूर्ण कांफ्रेन्स के आयोजन पर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी और उनकी टीम बधाई के पात्र हैं। मौजूदा हालात में इसका शीर्षक अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मौलाना अज़हर मदनी डायरेक्टर इकरा गर्लस इंटरनशनल स्कूल ने उनके संबोध

ान का अनुवाद पेश किया।

एस.एस.टी आयोग के पूर्व सदस्य डाक्टर ताजुददीन अंसारी ने कहा कि मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने हमेशा की तरह रामलीला मैदान में इस्लाम के अम्न व मानवता के सन्देश को साधारण करने का सराहनीय प्रयास किया है। मौलाना और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द हमेशा अम्न की स्थापना में सक्रिय रहे हैं।

इस महत्वपूर्ण सत्र में मौलाना इनायतुल्लाह मदनी ने ''आत्मघाती हमलों की अवैधता इस्लामी कानून की रौशनी में'', मौलाना सैयद हुसैन अहमद मदनी हैदराबाद ने ''शराब बुराइयों की जड़'' मौलाना अबू रिज़वान मुहम्मदी ने ''अम्न एक महान नेमत'' के शीर्षक पर संबोधित किया।

इन सत्रों में इन ओलामा के अलावा धार्मिक, समाजी और देश की महत्वपूर्ण हस्तियों ने भी संबोधन किया प्रसिद्ध आर्या समाज रहनुमा स्वामी अग्निवेश ने अपने संबोधन में कांफ्रेन्स के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पदधारियों विशेष रूप से मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को बधाई देते हुए कहा कि आपने शराब को भी कांफ्रेन्स का शीर्षक बनाया उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान में ओलामाए किराम और आप जैसे लोगों के इन्हीं कारनामों और फतवे ही की देन है कि हिन्दुस्तान से चन्द लोगों को छोड़कर कोई भी दाइश की गतिविधियों का आल-ए-कार नहीं बन सका।

उत्तराखंण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने कहा कि नफरत के माहौल में आपने शान्ति और मानवता की बात की है। और निमार्ण एवं विकास का संदेश सुनाने का काम किया है। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी इस सन्देश के लिए बधाई के पात्र हैं। बेशक यह सन्देश जहां तक पहुंचेगा वहां हिन्दुस्तान को फायदा पहुंचायेगा। और भाई चारा को बढ़ावा मिलेगा और हिन्दुस्तान मज़बूत होगा।

शैख अल मुफरिज ने कहा कि हमारे लिए खुशी की बात है कि मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द अम्न व मानवता को फैलाने और अल्लाह के सन्देश को साधारण करने के लिये संघर्ष करती है और यह महवपूर्ण कांफ्रेन्स इन्हीं प्रयासों का महत्वपूर्ण भाग है। इनके संबोधन का अनुवाद डा० जिल्लुर्रहमान तैमी ने किया।

कांफ्रेन्स में अब तक विभिन्न शीर्षकों पर ज्ञान एवं शोध पर आधारित किताबों और पत्रिकाओं का विवोचन महान ओलामा और देश एवं समुदाय के विद्ववानों के हाथों अमल में आ चुका है इनमें दबिस्ताने नजीरिया, तहरीके खत्मे नबुव्वत की २५वीं जिल्द, आयाते नबुव्वत, कुरआन करीम की इंसाइकलोपीडिया, तारीख अहले हदीस दक्षिण हिन्द, पत्रिका इसलाहे समाज का विशेषांक जिसमें दाइश और आतंकवाद के खिलाफ सामूहिक फतवे का नवीनीकरण है, उल्लेखनीय है।

❑❑❑

एलाने दाख़िला

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था

अलमाहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामी में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन 24 जून से 26 जून 2018 तक लिया जायेगा। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें।

आवेदन पत्र मिलने की आखिरी तारीख 18 जून 2018 है।

नोटः- हर क्षात्र को वज़ीफे के तौर पर हर महीने 3000/- दिया जायेगा। अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव
जामिया नगर दिल्ली-110025

फोन 011-26946205 , 011-23273407
Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

मुहम्मद स० अ० व० ने सबको मआफ कर दिया

मक्का के वासी जिस व्यक्ति की दावत पर विरोधी हो गये थे, उस व्यक्ति को नबी बनाये जाने से पहले अपना अमीन, इमानतदार मानते थे। चालीस साल पूरा होने के बाद जब आपने लोगों को दावत देनी शुरू की तो उसकी मुखालिफत में अपने भी शामिल थे। तीन साल गुप्त तौर पर दावत देने के बाद फिर खुल्लम खुल्ला दावत देनी शुरू कर दी। आप का पहला पैगाम था कि एक अल्लाह की इबादत की जाये, उसके अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

जब खुल्लम खुल्ला दावत देनी शुरू की तो आप ने तमाम कबीलों को जमा कर तौहीद का पैगाम सुनाया। इस अवसर पर आप ही के सगे चचा अबू लहब ने आप को अपमानित किया और यह भी कहा तुम्हारे हाथ टूट जायें, तुमने हमें इसी काम के लिये यहां जमा किया था। रसूल स० ने इस अपमान पर संयम किया।

उमैया बिन खलफ आप को यहां वहां गाली देना शुरू कर देता था लेकिन आप उस की इस हरकत का जवाब खामूशी से ही देते थे।

इसी तरह अबू जहल का आप के साथ जो व्यवहार रहा है वह सबको मालूम है, हरम शरीफ में और दूसरी जगहों पर बिला वजह डांट डपट करता रहता था लेकिन आप हमेशा खामूश रहे सब्र करते रहे। एक बार जब आप के चाचा अबू हमज़ा को यह मालूम हुआ कि अबू जहल ने मुहम्मद स० को बुरा भला कह कर दुख पहुंचाया है तो बहुत गुस्सा हुये और अबू जहल से इस अपमान का बदला भी लिया लेकिन मुहम्मद स० इस बदले से खुश नहीं हुये बल्कि अपने चाचा हमज़ा रजिअल्लाहो तआला अन्हो से फरमायाः जब आप इस्लाम कुबूल कर लेंगे तब मैं खुश हूंगा।

जो लोग आपके साथ इस तरह का व्यवहार कर रहे थे, आप उन्हीं के लिये दुआयें करते थे जो आप स० को कत्ल करने के इरादे से निकलता था पकड़े जाने के बाद उसको माफ भी कर देते थे जैसा कि उमैर बिन वहब का वाक्या मश्हूर है। इन्होंने ही कहा था अल्लाह की कसम अगर मेरे ऊपर कर्ज न होता और अपने बाल बच्चों के बिछड़ जाने का डर न होता तो मैं मदीना जाकर मुहम्मद को कत्ल कर देता। पकड़े जाने के बाद इन्होंने स्वीकार जिया कि मैं आप (मुहम्मद स०) को कत्ल करने आया था। मुहम्मद स० ने इनको माफ कर दिया।

(संपादन प्रभाग)

३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स की करारदाद

शीर्षकः ''विश्व-शान्ति और मानवता की सुरक्षा''

आयोजकः मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

दिनॉकः ९-१० मार्च २०१८, शुक्रवार-शनिवार, स्थानः रामलीला मैदान, नई दिल्ली

धार्मिक एवं मिल्ली समस्याएँ

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की इस आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स का यह विश्वास है कि इस्लाम धर्म अम्न व शान्ति का झण्डावाहक है और उसकी उज्जवल शिक्षाओं में मानवता के कल्याण एवं उत्थान का राज निहित है और हर कठिनाइयों का समाधान मौजूद है। इसलिये यह कांफ्रेन्स मौजूदा हालात में इस्लाम की शिक्षाओं को देश बन्धुओं तक पहुंचाने की ज़रूरत पर जोर देती है और महसूस करती है कि देश बन्धुओं तक चूंकि यह शिक्षाएं अब तक नहीं पहुंच सकी हैं इसलिये बहुत हद तक गलत फहमियों की बुनियाद पर यदा कदा समस्याएं एवं कठिनाइयां खड़ी हो जाती हैं।

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स बाबरी मस्जिद मामले में अदालत के फैसले को एक बेहतरीन और काबिले कुबूल समाधान मानती है अतः इस सिलसिले में मुस्लिम प्रसनल्ला और संबन्धित पक्षों के अलावा कोई ऐसा इकदाम न करे जिससे अवाम और देश उलझन में पड़े।

❑ दृष्टिकोण में मतभेद के बावजूद परस्पर प्रेम और सम्मान इस्लामी आस्था और विचार धारा की विशिष्ट विशेषता है और इसी में मुसलमानों की सफलता, कुव्वत और शौकत और सम्मान एवं सरबलन्दी का राज निहित है इसलिये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह भव्य कांफ्रेन्स समुदायिक संगठनों के प्रमुखों और संगठनों से अपील करती है कि वह एक दूसरे के सम्मान का ख्याल रखें, एक दूसरे के खिलाफ गलत बयानी और लांछन से बचें और कोई ऐसा बयान और भाषण न दें जिससे समुदायिक, मुलकी एकता और इन्सानी हित को नुकसान पहुंचता हो और आपस में नफरत और आपसी झगड़े को शह मिलती हो।

❑ यह सत्र मौजूदा हालात में ''विश्व शान्ति की स्थापना और मानवता की सुरक्षा'' के शीर्षक पर कांफ्रेन्स के आयोजन को समय की ज़रूरत करार देता है और यह आशा करता है कि इस कांफ्रेन्स में जिन अवामी समाजी, मानवीय समस्याओं और अम्न व शान्ति को चर्चा का

विषय बनाया गया है और आतंकवाद के खिलाफ बयानात हुये हैं, इन पहलुओं से धार्मिक, समुदायिक, जमाअती और मानव जीवन पर इसके दूरगामी प्रभाव होंगे। यह सत्र कांफ्रेन्स के सफल आयोजन और शीर्षक के चुनाव को उचित और समय की बड़ी ज़रूरत करार देते हुये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पदधारियों, कार्य एवं सलाहकार समीति विशेष कर अध्यक्ष महोदय, मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी, महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली, उनके उप सचिव और कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज को दिल की गहराइयों से बधाई देता है और अपील करता है कि इस प्रकार की कांफ्रेन्स और समारोह समय समय पर आयोजित होते रहें।

❑ यह कांफ्रेन्स मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की सभी अन्य सेवाओं के साथ आतंकवाद के निरन्तर विरोध में किये गये संघर्ष और विभिन्न गतिविधियों की प्रशंसा करती है और पदधारियों से अनुरोध करती है कि इस तरह का प्रोग्राम जारी रहना चाहिये। यह देश, मिल्लत, जमाअत और मानवता के हित में है और ज़रूरी है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स आसाम में नागरिकता के मामले को मानवीय आधार पर हल किये जाने की अपील करते हुये राजनीतिक पार्टियों से मांग करती है कि इस मामले को धार्मिक रंग न दे। कांफ्रेन्स का मानना है कि जो लोग कई दशकों से वहां रह रहे हैं उनके बारे में इस तरह के फैसले महज इसलिये लिये जा रहे हैं ताकि विशेष कम्यूनिटी को समाजी और राजनीतिक तौर पर बेअसर कर दिया जाये। इस तरह के फैसले देश एवं राष्ट्र के हित में नहीं हैं।

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स देश की विभिन्न जेलों में बन्द मुस्लिम नौजवानों की जमानत पर रिहाई और उनके मुकदमात के शीघ्रतः निमटारे की अपील करते हुये मांग करती है कि जिन नौजवानों को देश की सम्माननीय न्यायालयों ने बाइज्जत बरी कर दिया है उनके नुकसान का मुआवज़ा दिया जाये। देश की विभिन्न अदालतों से मुस्लिम नौजवानों का बाइज्जत बरी होना इस बात का सुबूत है कि इन नौजवानों का देश विरोधी गतिविधियों से कोई लेना देना नहीं है।

देश की समस्याएं

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स अपने इस विश्वास का अनुमोदन करती है कि हम संपूर्ण और पोखता मुसलमान हैं और पक्के सच्चे हिन्दुस्तानी हैं, हिन्दुस्तान की मिटटी से उठे हैं, इसी प्रिय देश की महेकती फिजाओं में जिन्दगी गुज़ारते हैं उसकी जमीन को सीने से लगाये हुये हैं, इसी के अन्दर जायेंगे और इसी धरती से उठेंगे। किसी प्रकार के भय और लालच इस प्रिय देश के निमार्ण एवं

विकास और शुभचिंतन से हमें नहीं रोक सकते। देश से प्रेम मुसलमान का तरीक़ा और इंसानी स्वभाव है। और उसकी सरहदों की सुरक्षा और उसकी राह मे जानों की कुर्बानी पेश करने के लिये हर वक्त तैयार हैं यह हमारे ईमान का भाग है हम सब हिन्दुस्तानी भाई भाई हैं और हमेशा हम इसी तरह देश के लिये भाई भाई बने रहेंगे। आज़ादी के वक़्त जिस तरह अंग्रेजों के मुकाबले में हिन्दू मुस्लिम, सिख, ईसाई, शीआ सुन्नी भाई भाई का नारा लगाया गया था आज उसी तरह देश की सुरक्षा के लिये हम यह नारा लगाते हैं।

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स देश में बढ़ती हुयी सामूहिक हिंसा के रूझहान पर चिंता व्यक्त करते हुये शासकों से मांग करती है कि गऊ सुरक्षा आदि के नाम पर हिंसा में लिप्त लोगों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाये क्योंकि अम्न व कानून को बाकी रखना सरकारों की जिम्मेदारी है और देश का कानून किसी जमाअत और व्यक्ति को कानून को अपने हाथ में लेने की इजाज़त नहीं देता। इस अपराध के करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करके यह एहसास दिलाया जाये कि संविधान ही ऊंचा है जिसकी पासदारी हर नागरिक की जिम्मेदारी है।

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स देश के विभिन्न भागों में होने वाले सांप्रदायिक फसाद पर चिंता व्यक्त करती है और केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों से मांग करती है कि इस प्रकार के फसादात की रोक थाम के लिये प्रभावी इकदाम करें और उन तत्वों को कानून के कटघरे में खड़ा किया जाये जो इस प्रकार के अपराध करते हैं। यह सत्र देश वासियों से अपील करता है कि वह हर हाल में सांप्रदायिक सदभावना बाकी रखें और समाज दुश्मन तत्वों की अफवाहों पर ध्यान न दें।

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स आसाम, बिहार, यूपी, पश्चिम बंगाल और देश के विभिन्न भागों में सैलाब से हुये जानी व माली नुकसान पर गहरे रंज व गम का इजहार करते हुये इसको देश एवं मिल्लत के लिये एक महान घाटा करार देती है और सरकारों एवं अवाम से मुसीबत की इस घड़ी में बिना भेदभाव धर्म एवं मसलक राहत और पुनर्वास की अधिकृत जरूरत पर जोर देती है। यह कांफ्रेन्स मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की तरफ से किये गये राहती काम की प्रशंसा करती है। और सैलाब में मरने वालों के परिवार वालों से शोक व्यक्त करती है।

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स देश और विदेश और बिलादे हरमैन शरीफैन (सऊदी अरब) में होने वाली आतंकी घटनाओं की कड़ी निन्दा करती है और सरकार से इस प्रकार के वाक्आत की रोकथाम के लिये ठोस क़दम

उठाने की मांग करती है और मांग करती है कि इन वाकआत की निष्पक्ष जांच करके असल अपराधियों को दण्ड दी जाये और अवाम को चाहिये कि आतंकवाद के खात्मे में अपनी सक्रिय भूमिका निभायें। किसी व्यक्ति के गैर जिम्मेदाराना और अतिवादी कर्म से उसके धर्म एवं आस्था को आरोपित करना किसी भी तरह दुरूस्त नहीं है।

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स दाइश और उसकी विनाशकारी कार्रवाइयों और गतिविधियों की कड़ी निन्दा करती है, इस्लाम और मुसलमानों का आतंकवाद और दाइश की विनाशकारी कार्रवाइयों से कोई संबन्ध नहीं है। दाइश बाज स्वार्थी ताक़तों की पैदावार और पोषित है।

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स समाज में नारियों के शोषण की विभिन्न शकलों विशेष रूप से दहेज, वरासत से महरूमी, भ्रूण हत्या आदि पर चिंता व्यक्त करते हुये अवाम और खवास से अपील करती है कि वह नारी अधिकार की सुरक्षा को यकीनी बनायें ताकि संसार का प्राकृतिक संतुलन बाकी रहे और परिवारिक व्यवस्था दुरूस्त रह सके।

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स बुराई की जड़ शराबनोशी, अन्य मादक पदार्थों के प्रयोग की वजह से खानदान और समाज में घटित होने वाली विभिन्न मुश्किलात पर चिंता व्यक्त करते हुये अवाम से अपील करती है कि इस नासूर से अपने समाज को बचायें और सरकार से मांग करती है कि वह इस पर पाबन्दी लगाये और साथ ही उन सरकारों की प्रशंसा करती है जिन्होंने इस सिलसिले में पहल करने की सराहनीय इकदाम किया है।

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स पर्यावरण की बिगड़ती सूरते हाल पर चिंता व्यक्त करते हुये अवाम और खवास और विश्व समुदाय से अपील करती है कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिये अपने अपने स्तर पर जिम्मेदारियां निभायें ताकि संसार का संतुलन बाकी रह सके और मानवता विभिन्न प्रकार के चैलेन्जों, संकटों और कठिनाइयों से मुक्ति पा सके।

विश्व समस्याएं

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स सीरिया में अंधाधुंद बमबारी की निन्दा करती है और वहां पर बड़े पैमाने पर होने वाले जानी व माली नुकसान पर चिंता व्यक्त करती है और राष्ट्रसंघ से मांग करती है कि सीरिया के अवाम की समस्याओं को हल किया जाये और वहां के अवाम को अधिकृत जानी और माली नुकसान से बचाने के लिये ठोस कदम उठाये जायें।

❑ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की यह कांफ्रेन्स म्यांमार में मानव अधिकार का हनन और वहां की फौज की तरफ से होने वाली अमानवीय जालिमाना कार्रवाइयों की निंदा करते हुये विश्व-समुदाय और बर्मा सरकार से मांग करती है कि